धर्म जीवन

"आत्मानं सततं रक्षेत्"
अर्थ - आत्मा की सर्वदा रक्षा करनी चाहिए।

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की लेखनी से

- अहंकार का महा भयानक अंधकार और उसकी पहचान

अतीत के झरोखे से

- धर्म क्या है, और क्या नहीं है?

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र – 3

- **सरदार साहिब श्रीमान् सरदार जमीयत सिंह जी**

स्वास्तित्व के संबंध में व्रत (21, 22, 23 अगस्त) पर विशेष

- ज्ञानी होना हो जो सम्भव (भगवान देवात्मा द्वारा रचित गीत)
- **उच्च भावों की विशेषता और बरकतें**

बच्चों का कॉर्नर

- भगवान देवात्मा के जीवन से - 2
- एक कौवे और मोर के परों की कहानी
- मज़ेदार बूझो तो जानें (पहेलियां)
- ज़रा हंस लो खिलखिलाकर (चुटकुले)

भगवान देवात्मा मैमोरियल फ़ाउन्डेशन द्वारा अब तक प्रकाशित पुस्तकों की सूची

पृष्ठ 14 का शेष

उच्च भावों की विशेषता और बरकतें

बात में समझा, कि दुनिया को ही छोड़ दें, और पहाड़ों और जंगलों में जाकर जीवन व्यतीत करें। चंद शरीफ़ों को छोड़कर ऐसे जन कई नीच भावों से छुटकारा नहीं पा सके और इसलिए एक ओर अपने जीवन के विचार से दिनों दिन अधिक नीच बनते गए, और दूसरी ओर वह चिन्ताओं ही चिन्ताओं में इतने जलते और कुढ़ते रहे, कि जिस की कोई हद नहीं। नीच जीवन से छुटकारा दुनिया से भाग जाने से नहीं होता। नीच जीवन के दुखों से तब छुटकारा होगा, कि जब मनुष्य नीच जीवन से सत्य मोक्ष प्राप्त करे। ईर्ष्या की आग से जलता हुआ जन शराब पीने से उस आत्मिक रोग वा ईर्ष्या से छुटकारा नहीं पाएगा। जंगलों और पहाड़ों में भाग जाने से मनुष्य ईर्ष्या से छुटकारा नहीं पा सकता। ईर्ष्या की आग से बचने के लिए ईर्ष्या के भाव से मोक्ष पाना आवश्यक है। आजकल हज़ारों जन अपने ग़म को सिनेमा या मोबाइल फोन या टी०वी० इत्यादि के द्वारा ग़लत करना चाहते हैं। एक जन ने मुझे बताया, कि वह बहुत दुखी रहते हैं, पारिवारिक जीवन उन के लिए नरक साबित हो रहा है। उनके लिए जीवन बहुत दुखमय बना हुआ है। वे प्रतिदिन सिनेमा जाने का अवसर लाभ न करें, तो उनका हृदय शान्ति नहीं पाता। अब नीच जीवनधारियों को यह सच्चाई नज़र नहीं आती, कि उनके 99 फ़ीसदी दुखों का कारण उनके नीच सुख अनुराग हैं। इसलिए जब तक नीच सुख अनुराग उनके हृदयों के मालिक रहेंगे, तब तक नशों के पीने वा खाने या जंगलों में भागने या सिनेमा में जाने या उनके प्रतिदिन के पूजा पाठ करने से काम नहीं चलेगा। कई मूर्ख जन गीता के पाठ में लग जाते है। कई जन एक या दूसरी तथा कथित ईश्वर रचित पुस्तक के पाठ में लग जाते है। यह सब तरीके बेअसर हैं। भगवान् देवात्मा ने यह तत्त्व प्रगट किया है, कि मनुष्य की कुल चिन्ताओं और क्रियाओं को कराने वाले भाव ही होते हैं और यह भाव शक्तियां दो प्रकार की हैं। नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं और उच्च सुख अनुराग और उच्च घृणाएं। नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं सब पापों, जुर्मों और गुनाहों का मूल कारण है और महा भयानक मोह बन्धन उत्पन्न करते हैं जिनके भयानक फलों के कारण मनुष्य असह्य और अनगिनत दुख पाते हैं, और इस क़दर अनमेल की आग भड़काते हैं, कि जिसका कोई ठिकाना नहीं। भगवान् देवात्मा ने फ़रमाया है, कि इस कुल नरक से छुटकारा पाने का हल इसमें है कि मनुष्य नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं से सत्य मोक्ष प्राप्त करे और इनसे सत्य मोक्ष सिवाय भगवान् देवात्मा के और कोई नहीं दे सकता। इसलिए भगवान् देवात्मा ही ऐसे सब दुखों के हर्ता हैं। हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम उच्च भावों को उत्पन्न और विकसित करें। उच्च भाव ही मनुष्यों को समुचित सुख प्रदान करते हैं और उनके लिए असीम बरकतों का द्वार खोलते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 7

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | अगस्त – 2021 वार्षिक मूल्य 50 रुपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की लेखनी से

अहंकार का महा भयानक अंधकार और उसकी पहचान

किसी मनुष्य के भीतर अहंकार का अनुचित अधिकार जितना अधिक हो, उतना ही वह झूठ मूठ भी अपनी स्तुति और बड़ाई सुनकर प्रसन्न होता है; और उसके विरुद्ध अपनी किसी सचमुच की त्रुटि, हीनता अथवा अवज्ञा को सुनना नहीं चाहता, और यदि उसका कोई हितकारी केवल उसके हित के लिए उसकी कोई त्रुटि अथवा अवज्ञा उस पर प्रगट करे, तो उसको सुनने के साथ ही उसका खून उबलना आरम्भ हो जाता है। उसके चेहरे का रंग कुछ और हो जाता है, आंखों की चितवन बदल जाती है, और उसका हृदय उस हितकर्त्ता के प्रति घृणा अनुभव करता है और जब इस प्रकार उसके भीतर यह अहंकार का महा भयानक अन्धकार छा जाता है तो उसकी सारी गति बदल जाती है। उसकी बातचीत और उसकी क्रियाएं सब उलटी होने लगती हैं। सम्मान के स्थान में अपमान, आकर्षण के स्थान में विकर्षण, प्रीति के स्थान में घृणा, निकटता के स्थान में दूरी, और उच्च भावों के स्थान में नीच भाव उसके भीतर उत्पन्न होने लगते हैं। वस्तुतः उसके जीवन का सारा तख्ता पलट जाता है। उसके जीवन की सारी कल उलटी हो जाती है। हृदय के भीतर ज्योति, धैर्य, शांति, मिठास और प्रफुल्लता के स्थान में अन्धकार बेचैनी, जलन, दुख और क्लेश उत्पन्न हो जाते हैं। मानों स्वर्ग के स्थान में नरक छा जाता है, और सब से आश्चर्य बात यह है कि जिसके भीतर यह सब लीला हो रही है, जिसके जीवन की यह सब भयानक अवस्था बन रही है, उसे इस घोर अन्धकार में पड़कर अनेक बार अपने आप में कोई त्रुटि वा हीनता दिखाई नहीं देती। उसे अपनी अवस्था शोचनीय और कृपापात्र अनुभव नहीं होती। किन्तु उलटा उसे यह प्रतीत होता है, कि मैं आप तो सब अंगों में पूर्ण और निपुण हूं, परन्तु यह जो मुझे दोषयुक्त वा अपराधी बताते हैं, इन्होंने मुझे यूंही दुखी कर रखा है। इन्होंने ही मेरे भीतर यह आग लगा दी है। इसलिए भीतर दुखी होकर उन सब को बुरा कहता है, और जब वह दुख हद्द से बढ़ जाता है, तो जोश में आकर एक घबराए हुए घोड़े की न्याईं, अपने चारों ओर दुलत्तिया

फैंकने लगता है, और अन्धेरे में यह न देखकर कि सामने कौन खड़ा है, उसके साथ उसका क्या संबंध है, और वह उसके साथ आज तक कैसा हितकर व्यवहार करता रहा है, जो सामने आवे उसी को ज़ख्मी करता चला जाता है, और उससे जहां अपने एक वा दूसरे अंग को भयानक आघात् पहुंचाता है, वहां दूसरों को भी बड़ी बड़ी चोटें पहुंचाने का हेतु बनता है। ऐसी अन्धकार की अवस्था में उसका कोई ऐसा हितकारी संबंधी भी (कि जिसने आजतक उसका हित ही हित किया है, हां इतना हित किया है, कि जिसको उसने स्वयं अनेक बार अनुभव भी किया है) हित भाव से परिचालित होकर यदि उसको उस महा दुखिया और कृपापात्र अवस्था से निकालने के लिए कोई यत्न करने लगे तो वह अन्धा आत्मा उसे कृतज्ञता और धन्यवाद के भावों से देखने के स्थान में, उलटा उसको भी अपना वैरी देखता है। तब अहंकार का अन्धकार कितना भयानक! और मनुष्यों के लिए उसके जानने और उससे निकलने की कितनी बड़ी आवश्यकता! और जो जन ऐसी भयानक अवस्था में घिर जाते हों, उनकी कैसी शोचनीय और कृपापात्र अवस्था!!

जीवन दाता श्री देवगुरु जी की सर्वोच्च और परम हितकर ज्योति मनुष्यों को उनके जीवन का सच्चा ज्ञान देकर उन्हें उनकी नाना नीच गतियों का बोध कराती है, और उनकी उद्धारिणी शक्ति उन नीच गतियों से उनका उद्धार करती है, इस लिए बड़े सौभाग्यवान् हैं वह आत्मा, जिन्हें उनकी इस परमहितकर ज्योति और शक्ति के द्वारा अपने जीवन और उसकी नीच गतियों को जानने, पहचानने और उनसे उद्धार पाने का महोच्च अधिकार प्राप्त हो गया हो।

द०स०

अतीत के झरोखे से

(120 वर्ष पहले 'जीवन पथ' में छपे कुछ लेख)

धर्म क्या है, और क्या नहीं है?

प्र० - हे भगवन्! धर्म किसे कहते है?

उ० - धर्म का अर्थ स्वभाव अथवा आचार है। मनुष्य के संबंध में धर्म उसकी नीच गति विनाशक और उच्च गति विकाशक क्रिया का नाम है।

प्र० - नीच और उच्च गति क्या?

उ० - गति चाल को कहते हैं। शक्ति की आकर्षण और विकर्षण क्रिया से गति उत्पन्न होती है। विश्व का प्रत्येक पदार्थ शक्ति की क्रिया के अधीन एक वा दूसरी गति को प्राप्त होकर अपेक्षाकृत उच्च वा नीच अवस्था ग्रहण करता है। अतः उच्च अवस्था के ग्रहण करने पर उसकी गति उच्च, और नीच अवस्था के ग्रहण करने पर उसकी गति नीच कहलाती है।

प्र० - उच्च और नीच गतियों का फल क्या होता है?

उ० - उच्च गतियों के अधीन होकर एक एक अस्तित्व अपेक्षाकृत अधिक से अधिक सुन्दर और श्रेष्ठ बनकर विकास लाभ करता है, और नीच गतियों के अधीन होकर अपेक्षाकृत बिगड़ते बिगड़ते एक दिन सर्वथा नष्ट हो जाता है। यह उच्च और नीच गति दायक, विकास और विनाश का नियम सारे विश्व के भीतर, उसके प्रत्येक पदार्थ पर- चाहे वह प्राणविशिष्ट हो, और चाहे प्राणविहीन हो- काम करता है, और इसीलिए अटल है।

प्र० - क्या मनुष्य भी इस नियम के अधीन है?

उ० - हां, कोई अस्तित्व-चाहे वह मनुष्य हो, चाहे पशु हो, चाहे उद्‌भिद हो और चाहे जड़ हो, इस नियम के अधिकार से बाहर नहीं है।

प्र० - तो क्या मनुष्य का आत्मा भी नीच गतियों के अधीन होकर धीरे धीरे एक दिन सर्वथा विनष्ट हो सकता है?

उ० - हां, नि:सन्देह। प्रतिदिन सहस्र सहस्र आत्मा इस प्रकार विनष्ट होते हैं।

प्र० - क्या विविध धर्म सम्प्रदायों और समाजों के करोड़ों जन जो यह विश्वास करते हैं, कि आत्मा अमर है, और उसका कभी नाश नहीं होता, वह निश्चय सच नहीं?

उ० - नहीं, यह विश्वास उनका सर्वथा मिथ्या और कल्पना मूलक है। सत्य और विज्ञानमूलक नहीं है। जीवन तत्वों के न जानने और विश्वव्यापी विकास और विनाश संबंधी अटल नियम के विषय में प्रकृत ज्ञान के न रखने से ही, करोड़ों लोग प्रकृत धर्म को नहीं जानते, और नाना प्रकार की कल्पित बातों को धर्म समझते हैं।

प्र० - तो क्या पृथ्वी के विविध सम्प्रदायों और समाजों में जो नाना प्रकार के धर्म प्रचलित हैं, वह प्रकृत धर्म नहीं है?

उ० - कदापि नहीं। प्रकृत और विज्ञानमूलक धर्म मनुष्य मात्र के लिए एक ही है। विज्ञानमूलक धर्म को छोड़कर और जितने धर्म कहलाते हैं, वह सब कल्पना मूलक हैं।

प्र० - विज्ञानमूलक धर्म क्या?

उ० - जो धर्म किसी ऐसी आधारभूमि पर स्थापित हो, कि जिस को प्रत्येक विज्ञान स्वीकार करता हो वह विश्वव्यापी विकास और विनाश संबंधी अटल नियम है, कि जिनको पृथ्वी के सब वैज्ञानिक जन स्वीकार करते हैं। देवधर्म इसी महा नियम की आधार भूमि पर स्थिति करता है।

प्र० - अच्छा! विज्ञानमूलक सत्य धर्म को न जानकर लोगों ने जिन कल्पनामूलक धर्मों की सृष्टि की है, वह किस प्रकार के हैं?

उ० - वह नाना प्रकार के हैं। देखो:-

(1) लाखों जन किसी प्रकार के **मत** वा **विश्वास** को धर्म समझते हैं, अर्थात् किसी ईश्वर वा ईश्वर के अवतार, किसी देवी देवता, किसी शिक्षक, पैग़म्बर, प्रभु और

गुरु, किसी पुस्तक और मोक्ष विषयक एक वा दूसरी कहानी, द्वैत वा अद्वैतवाद आदि के मानने वा विश्वास करने का नाम धर्म समझते हैं। अब यह मानना वा विश्वास करना धर्म नहीं है।

(2) लाखों जन शारीरिक **वेशभूषा** को **धर्म समझते** हैं, यथा- शिखा रखना, केश, कंघा, करदम, कच्छ और कड़ा रखना, जटा रखना, दाड़ी और मूछ आदि न रखना, भभूत मलना, चन्दन लगाना, तिलक लगाना, कंठी, माला, कोपीन, श्वेत, गेरुये, नीले, रेशमी आदि वस्त्र पहनना, कान फड़वाना, तोंबा रखना, चिमटा रखना, चोला, रोब, क्रास, कमरबन्द, मेली, खड़ाऊं आदि पहनना इत्यादि इत्यादि। अब यह वेशभूषा धर्म नहीं है।

(3) लाखों जन **तीर्थ स्थानों** की यात्रा, वहां पर मूर्त्तियों वा समाधियों वा कबरों आदि के दर्शन और वास और विशेष विशेष जलाशयों में स्नान और उनके पानी पीने आदि को धर्म समझते हैं। यथा हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, काशी, मथुरा, वृन्दावन, गया, बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारिका और सेतुबंध रामेश्वर आदि की यात्रा, गंगा, नर्वदा, सर्जू आदि नदियों में स्नान, गंगाजल पान, विविध दरगाहों और मक्का, मदीना, जेरुसेलम आदि की यात्रा इत्यादि इत्यादि। अब यह यात्रा और स्नान आदि धर्म नहीं है।

(4) लाखों जन **योगाभ्यास** अर्थात् वायु खैंचने, रोकने "सुरत" के चढ़ाने और विविध प्रकार के आसनों के जमाने आदि की क्रिया को धर्म समझते हैं। परन्तु यह कोई क्रिया धर्म नहीं।

(5) लाखों जन किसी **स्तोत्र** वा **पुस्तक** आदि के पाठ, भजनों के गान वा कीर्तन, किसी मंत्र वा नाम के जप, किसी मूर्त्ति आदि पर पानी और फूल और पत्रादि चढ़ाने, उसके सम्मुख धूप और दीप जलाने, खाने आदि की कोई वस्तु आगे रखने, कबरों पर फूल और तवाफ़ चढ़ाने, ताज़िया बनाने आदि को धर्म समझते हैं। परन्तु केवल इस प्रकार की कोई क्रिया धर्म नहीं।

(6) लाखों जन मिथ्या वर्ण वा **कुलभेद** और खानपान विषयक अनुचित छूतछात की रक्षा को धर्म समझते हैं, परन्तु यह धर्म नहीं।

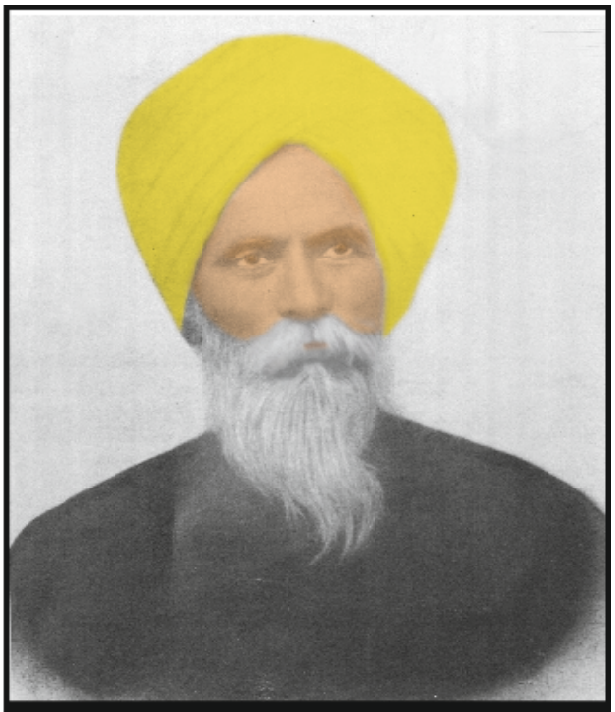
(7) लाखों जन विशेष विशेष दिनों में **उपवास** अथवा विशेष विशेष वस्तुओं के आहार करने का नाम धर्म समझते हैं। जैसे कृष्ण जन्माष्टमी को निर्जल और निराहार रहना, एकादशी वा मंगल आदि के दिन व्रत रखना। एकादशी को चावल न खाना। मंगल के दिन नमक न खाना, इत्यादि। यह सब बातें धर्म नहीं।

(8) लाखों जन एक वा दूसरे **अनुष्ठान** को धर्म समझते हैं, यथा मुण्डन, यज्ञोपवीत, रखड़ी और अनन्त, ख़तना, बपतिस्मा, पौहल, बकरों, भेड़ों, ऊटों आदि की बलि वा कुरबानी, इत्यादि। परन्तु यह सब धर्म नहीं। समझते हैं। परन्तु केवल इस प्रकार की कोई क्रिया धर्म नहीं।

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र – 3

सरदार साहिब श्रीमान् सरदार जमीयत सिंह जी

हमारे बहुत बड़े सौभाग्य कि आज हम परम पूजनीय भगवान् देवात्मा द्वारा घड़े हुए जिस सुनहरे जीवन की ओर अपना ध्यान ले जा रहे हैं वे अति उच्च कोटि की श्रद्धा भाव के मालिक थे जिन के ऐसे जीवन से हमें सचमुच बहुत प्रेरणा मिलती या मिल सकती है।



श्रद्धेय श्रीमान् जमीयत सिंह जी
(1848 – 1921 ई०)

सरदार साहब जिस खानदान में पैदा हुए उसमें उनके भीतर अनेक मिथ्या विश्वासों तथा कुसंस्कारों में फंसते चले जाना स्वाभाविक था। चारों ओर के विनाशकारी प्रभावों ने इन्हें ऐसी अवस्था में पहुंचा दिया कि वे शराब पीने, मांसाहार करने, अफ़ीम खाने तथा रिश्वतखोरी जैसे महा पापों में फंस गए। उनके अपने शब्दों में:

"जवानी बड़ी मस्तानी हुआ करती है। इस आयु में अपनी भलाई साधारणत: दिखाई नहीं देती। ऐसी आयु में माता पिता की छत्र छाया से वंचित होने से विनाश की ओर जाने की गति जैसी कुछ शोचनीय हो सकती है, उस का अनुमान उन बहुत से युवकों के नष्ट हुए जीवनों से हो सकता है कि जिनके हालात इस देश और अन्य देशों में देखने और सुनने में आते रहते हैं।"

वह अपने एक और पत्र में लिखते हैं:

"मैं उस समय यह विश्वास रखता था कि किसी मंत्र या वाक्य को चालीस दिनों में सवा लाख बार रटने से अपनी मनोकामना पूरी हो जाती है। ऐसे विश्वास के अधिकार में आकर मैंने ऐसे कई चिल्ले पूरे किए। मैं यह विश्वास रखता था कि किसी तावीज़ के असर से मनुष्य को अपने मनोरथ में सफलता मिल जाती है। इसलिए एक मुक़दमे में मैंने ऐसा तावीज़ प्राप्त किया था। मेरा विश्वास था कि किसी विशेष स्थान पर नहाने से पाप दूर हो जाते हैं और उसका अच्छा फल मिलता है। मैं

इस विश्वास के अनुसार अमृतसर के पांचों तालाबों पर नहाया और गोविंदवाल की बावली साहिब की पौड़ियों पर बैठ कर, एक एक पौड़ी पर एक एक बार जपजी साहिब का पाठ किया, और हर बार पाठ समाप्त होने पर स्नान किया और इस प्रकार पन्द्रह पौड़ियां पूरी कीं, क्योंकि मैंने यह सुना हुआ था कि चौरासी पौड़ियों पर नहाने से चौरासी लाख जूनें कट जाती हैं। मैं उन दिनों ईश्वर से प्रार्थनाओं और दुआओं के द्वारा पापों के क्षमा किए जाने का विश्वास रखता था। इस विश्वास के अनुसार बहुत सी प्रार्थनाएं दिली जोश से कब्रिस्तान में जाकर किया करता था, और ज़ार ज़ार रोया करता था। यदि वह प्रार्थनाएं जो अब तक मुझे याद हैं, यहां पर लिखूँ तो यह पत्र लम्बा हो जाएगा। इस लिए मैं उन्हें नहीं लिखता। मैंने एक परमहंस से दिल के टिकाने का उपाय पूछा। उसने कहा कि स्नान करके एकान्त में बैठकर शिवोहम्, शिवोहम् का जाप किया करो। मैंने उसको भी कई सप्ताहों तक प्रात: काल स्नान करके खूब रटा परन्तु शान्ति न मिली। मैं कर्मों का फल मरने के बाद एक या दूसरे रूप में मिलने पर विश्वास करता था।"

इनका संबंध भगवान के चरणों से कैसे जुड़ा? यह ऐसी रोमांचक और कम से कम मेरे लिए तो बहुत ही भाव विभोर कर देने वाली घटना है जिसका मैं शब्दों में वर्णन करने की योग्यता नहीं रखता। पाठक साफ़ साफ़ देख सकेंगे कि उनका परम पूजनीय भगवान के साथ ऐसा असाधारण संबंध बनाने वाली इस घटना की जड़ में था उनका असाधारण श्रद्धा भाव जिसने उन्हें हमारी विशेष श्रद्धा का पात्र बना दिया।

श्रीमान जी मोगा के स्कूल के मुख्य अध्यापक थे। सन् 1879 का वर्ष था, अभी तक तो पूजनीय भगवान ने अपना जीवन व्रत तक ग्रहण नहीं किया था परन्तु उन दिनों भगवान 'बिरादरे हिन्द' नामक पत्रिका प्रकाशित करते थे। श्रीमान जी अपने स्कूल के विद्यार्थियों को परीक्षा दिलवाने अमृतसर गए हुए थे। लड़कों को परीक्षा हाल में भेजकर वे अपना समय बिताने के लिए स्कूल की लाईब्रेरी में जाकर अखबार पढ़ने लग गए। क्या गज़ब हुआ! उनके सौभाग्य और इससे भी बढ़कर हमारे सौभाग्य की भी सीमा नहीं रही कि वहां लाईब्रेरी की मेज़ पर वही 'बिरादरे हिन्द' अखबार पर उनकी नज़र पड़ी और वह उसे पढ़ने बैठ गए, वहीं से आरम्भ हुई विचित्र घटनाओं की एक अति सुन्दर लड़ी। उसे पढ़ने की देर थी कि उसके विशेष लेखों ने उनके दिल पर जादू का सा असर किया और चुम्बक की न्याई उनके विशेष हृदय की तार को सदा के लिए अपनी ओर खींच लिया।

यहां ध्यान देने की बात यह है कि ये लेख पूजनीय भगवान के देव जीवन के विकास के प्रारम्भिक वर्षों के थे। मैं इस दृश्य पर जब विचार करता हूं तो मुझे साफ़ दिखाई पड़ता है कि मैंने भी परम पूजनीय भगवान के अनेक लेख समय समय पर पढ़े हैं और ऐसा ही मेरे साथी पाठकों ने भी किया होगा। हम में से कितनों के दिलों पर ऐसा जादू का सा असर हुआ होगा और किसके दिल के तार चुम्बक की न्याई भगवान के साथ जुड़े होंगे। कम से कम मेरा आत्मा तो यह सच्ची साक्षी देता है

कि इस नितांत आवश्यक पहलू में तो मैं अत्यन्त तुच्छ प्रमाणित होता हूं, इसीलिए मैं उनके पवित्र चरणों में अपना सिर झुकाए बिना नहीं रह सकता।

पूजनीय भगवान के लेखों के पाठ से ही आश्चर्यजनक क्रान्ति

इसी पत्रिका के पाठ के विषय में श्रीमान जी यह फ़रमाते हैं:

"यह पत्रिका प्रति मास मेरे पास पहुंचती और उसके प्रत्येक अंक के पाठ से मेरे गले में जंज़ीर की एक ऐसी कड़ी पड़ जाती जो मुझे उसके प्रकाशक के साथ जोड़ने का काम करती। धीरे धीरे उसके द्वारा और फिर जब उसका स्थान "धर्म जीवन" ने ले लिया, तो उसके पाठ से उसके प्रकाशक (भगवान देवात्मा) की ज्योति ने मेरा अंधकार दूर करना आरम्भ किया, और उनकी शक्ति ने मुझे आत्मिक बल देना आरम्भ किया। पहले सम्भवत: सन् 1881 में एक चौबारे में जो ब्रह्म मंदिर के पास था, मुझे उनके (भगवान देवात्मा के) दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके दर्शन करने से मेरा हृदय और भी अधिक उनकी ओर खिंच गया। फिर दूसरे वर्ष जब मिडल की परीक्षा दिलाने (लाहौर) गया तो मैंने जिले के अन्य अध्यापकों के साथ ब्रह्म मंदिर में उनका उपदेश सुना। मेरे साथ के दूसरे अध्यापकों ने अपने अपने दिल की अवस्था के अनुसार लाभ तो उठाया, परन्तु उन्होंने उनकी ओर वह आकर्षण अनुभव न किया जो मैंने किया। फिर उनकी रचित पुस्तकों यथा रूहानी जिन्दगी आदि ने और उनके शिष्यों ने मुझ तक अपना अमृत जल पहुंचाना आरम्भ किया....। इसलिए मेरी हृदय भूमि में उनकी रचनाएँ और उनके शिष्यों के उपदेश बहुत गहरा असर करते थे और मेरी आध्यात्मिक प्यास को बुझाते थे।"

श्रीमान जी के द्वारा उनके विद्यार्थियों में विस्मयजनक उच्च परिवर्तन

श्रीमान जी लिखते हैं: "उनकी पुस्तकों और पत्रिकाओं के पाठ से मेरे कितने ही विद्यार्थियों के दिलों को भी उनके पूज्य लेखक के चरणों के निकट होने का अवसर मिल गया जिनमें से श्रीमान् देवत्व सिंह जी, श्रीमान् भाई अतर सिंह जी, सरदार साहिब श्रीमान् सावन सिंह जी और श्रीमान् खुशहाल सिंह जी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। श्रीमान् देवत्व सिंह जी में विशेष योग्यता थी। उन्होंने भगवान की ज्योति और शक्ति को विशेष रूप से आत्मसात् किया। उनके जीवन में बड़ा शुभ परिवर्तन आया। वह मुझे भी भगवान का रूप, जो मुझे अपनी धुंधली दृष्टि के कारण दिखाई नहीं दिया था, उसी प्रकार दिखाने का हेतु प्रमाणित हुए जिस प्रकार कोई तीव्र बुद्धि का व्यक्ति किसी अल्प दृष्टि वाले जन से मणिकों का रंग रूप और चमक दमक को सुनकर पहाड़ पर उसके याचक को कितने ही चमकदार पत्थरों में से असली हीरे निकाल कर उसको दिखाकर कहता है कि यह हैं वो हीरे जिनकी महिमा तुम गाया करते हो, जिनके राग तुम अलापा करते हो। अत: श्रीमान् देवत्व सिंह जी के यत्नों ने मुझे भगवान की सेवकी के महान अधिकार तक पहुंचा दिया।"

सन् 1893 में फिरोज़पुर के एक अंधे सिख वकील ने भगवान और उनके मिशन

को सर्वनाश करने का बीड़ा उठा लिया था। सभी सिख वकील तथा अन्य जन जिनमें जज भी शामिल थे ऐसे षडयंत्र में पूरे ज़ोर शोर से शामिल थे। ऐसे समय में सिख धर्म से संबंधित होने के बाबजूद और भगवान केवल श्रद्धावान होने के कारण अपनी पूरी सिख बिरादरी से लोहा लेने वाले हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र यही श्रीमान जी थे। उनकी ऐसी असाधारण सेवा और वीरता के लिए हम सभी बहुत अधिक कृतज्ञ हैं।

पूजनीय भगवान के श्रीमान जी के प्रति कृतज्ञता के उदगार:

"फिर सन् 1907 के जुबली महोत्सव के अवसर पर जब सरदार साहिब ने अपना जीवन भगवान देवात्मा के मिशन के लिए भेंट किया और सरदार साहिब देव समाज के कर्मचारी के पद पर ग्रहण किए जाने लगे तो वहां कितने ही व्यक्तियों के साथ वह पूजनीय भगवान के सम्मुख खड़े हुए थे, तब उस समय भी भरी सभा में सैंकड़ों सेवकों और अन्य जनों के सम्मुख भगवान सरदार साहिब की इस सहायता का भरे दिल से वर्णन करते हुए विवश फूट पड़े और श्रीमान् जमीयत सिंह जी और सरदार गुरमुख सिंह जी बी.ए. को सम्बोधन करके फ़रमाया कि जब सन् 1893 में हम पर और हमारे एक अनुयायी पर फ़िरोज़पुर की अदालतों में एक के बाद एक दूसरे फ़ौजदारी मुक़दमे दायर किए गए थे, तब एक ओर सरदार गुरमुख सिंह जी उन वारंटों के जारी कराने में सहायक होकर हम पर अत्यन्त कष्टदायक सवालों पर सवाल करने में व्यस्त होते थे और यह यत्न करते थे कि हमें जेल में भेजा जाए और दूसरी ओर श्रीमान् जमीयत सिंह जी उस समय तक हमारे नियमित सेवक न होने के बावजूद भी हमारे लिए जामिन बनने (जमानत देने) और हमारी सहायता करने के लिए मोगा से फ़िरोज़पुर भागे आते थे और हमारे उस समय की विपदाओं को घटाने का कई प्रकार का यत्न करते थे। बेशक उस समय इन दोनों माननीय जनों के विषय में दो परस्पर विरोधी दृश्य देखने में आते थे और एक के सलूक का दूसरे के सलूक के साथ कोई मेल नहीं था, तो भी सरदार गुरमुख सिंह जी की अच्छी आंखों ने हमें अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

9 अक्तूबर सन् 1913 की प्रातः देव समाज के कितने ही कर्मचारी, सेवाकारी और अन्य सेवक जिनमें मोगा के श्रीमान् सरदार जमीयत सिंह जी भी शामिल थे, भगवान देवात्मा के दर्शनों के लिए उनके निवास स्थान में पहुंचे। तब भगवान देवात्मा ने सरदार जमीयत सिंह जी को सम्बोधन करके और उनके साथ अपने बहुत लम्बे काल के संबंध का जिक्र करके जब अपने कुछ देव भावों को व्यक्त किया तो उनके प्रभावों से उस समय जो दृश्य उत्पन्न हुआ, वह अत्यन्त दर्शनीय था। भगवान देवात्मा ने उस समय श्रीमान् जमीयत सिंह जी के आत्मा में सच्ची दीनता और अपने संबंध में उनकी सच्ची और भरोसे के योग्य वफ़ादारी का वर्णन करके भरे दिल से फ़रमाया कि अमुक अयोग्य और अत्यन्त कृतघ्न व्यक्ति (पं० देवरत्न) की 24 वर्ष तक नाना प्रकार की भलाई और सेवा में मैंने जितना असीम परिश्रम किया और उससे जितने और जिस जिस प्रकार के घोर दुख और कष्ट पाए और

सहे कि जितने और जिस जिस प्रकार के किसी और से नहीं पाए और नहीं सहे और जो सब कुछ अकारथ से भी बुरा प्रमाणित हो रहा है, वैसा परिश्रम और वैसी सेवा करने का अवसर यदि मैंने आप जैसे अच्छे प्रकृति के मालिक व्यक्ति के संबंध में किया होता तो (भगवान के मुखारबिन्द से अभी यह दुख से भरे हुए शब्द निकले ही थे कि उनके सुनने के साथ ही श्रीमान् जमीयत सिंह जी का हृदय फूट पड़ा और वह बहुत ज़ोर से चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे) भगवान ने उस समय फिर फ़रमाया "काश आपकी जैसी प्रकृति के आत्मा मुझे अधिक संख्या में प्राप्त होते और वह मेरे निकट रहते होते। सरदार जी! आप उन विशेष व्यक्तियों में से हैं कि जिनको मैंने अपने जीवन की एक या दूसरी विपदा में सदा अपना समझा और अपना पाया है। अत: सन् 1893 में जब मुझ पर मुक़दमे किए जाने के कारण उत्पीड़न आरम्भ हुआ था और कई वर्ष तक जारी रहा था, उस समय यद्यपि आप मेरे सेवक भी न थे, तभी और उसके बाद भी उन दिनों के संकट में आपने जिस प्रकार मेरा साथ दिया, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता।"

भगवान देवात्मा के इस उद्‌गार को सुनकर सरदार जी और भी बेचैन हो गए और उसी दशा में रो रोकर कहने लगे- "मेरे और मेरे परिवार के लिए आपने जो कुछ किया है, उसका बदला मैं कभी नहीं दे सकता। काश मेरे वंश में कोई ऐसा व्यक्ति होता कि जो कुछ मैं स्वयं इस वृद्ध अवस्था में नहीं कर सकता, वह वो व्यक्ति करके आपके वर्तमान दुखों और संग्रामों में आपके लिए सहायक बन सकता" वाह! शिष्य और गुरु के दिल का कैसा अलौकिक मेल और उसका कैसा उच्च दृश्य!! उस समय का सारा दृश्य ऐसे उच्च असरों से भरा हुआ था कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। सारे ही उपस्थित जनों के हृदय अत्यन्त प्रभावित हो रहे थे। उनमें से कितनों की आंखों में पवित्र आंसू थे।"

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का श्रीमान जी के नाम एक पत्र:

"प्रिय सरदार जमीयत सिंह जी,

आपका पहली मार्च का पत्र मुझे अभी मिला है। मैंने उसके पिछले भाग में आपके त्याग विषयक उच्च भावों को पढ़कर कितना उच्च और हर्षप्रद प्रभाव लाभ किया है, उसका इस बात से अनुमान हो सकता है कि मैं अपने ही हाथ से यह पत्र लिखकर उसे प्रकाश करने के लिए तैयार हो गया हूं। उच्च जीवन विषयक सत्य ज्योति के मिलने और उच्च शक्ति द्वारा उच्च भावों के जाग्रत होने पर ही इस प्रकार की उच्च आकांक्षा उत्पन्न हो सकती है कि जो आपने अपने पत्र में प्रकाश की है। वक्त आ गया है कि मेरा प्राय: चौथाई शताब्दी का लगातार घोर संग्राम समाज के बहुत से अधिकारी आत्माओं को हरकत में लाकर आपकी न्याई उच्च त्याग और उच्च लक्ष्य के लिए आकांक्षी करे। मेरा शरीर अब बहुत कुछ रह गया है और बहुत बड़ी आवश्यकता है कि मेरी उच्च शक्तियां अब और आत्माओं में विकसित होकर उनके स्वस्थ और पुष्ट शरीरों के द्वारा काम करें। एक आम के वृक्ष से हज़ारों फल एक साल में उत्पन्न होते हैं। मैं चाहता हूं कि मेरे उच्च जीवन के वृक्ष से भी हज़ारों उच्च

जीवन धारी आत्मा हर साल उत्पन्न हों और उनके द्वारा हज़ारों आत्माओं और अन्य अस्तित्वों का अधिक से अधिक हित हो। सत्य धर्म की सत्य ज्ञान विषयक ज्योति और उसकी विविध उच्च बोध उत्पादक शक्तियों के प्रभावों के प्रचार के लिए हज़ारों अधिकारी आत्मा धर्म विकासालय में प्रवेश करके आवश्यक योग्यता प्राप्त करें। इस गिरे हुए देश की गति बदले। अन्य देशों की गति बदले और सारी पृथ्वी में ही एक नया युग उत्पन्न हो। विश्व के प्रत्येक विभाग में जो जो और जहां तक उच्च विकास सम्भव हो, वह आवे और लोग मेरी न्याईं मेरी ज्योति में देखें कि इस सेवा से बढ़कर मनुष्य के लिए और कोई हितकर कार्य और जीवन का उद्देश्य या लक्ष्य नहीं हो सकता।

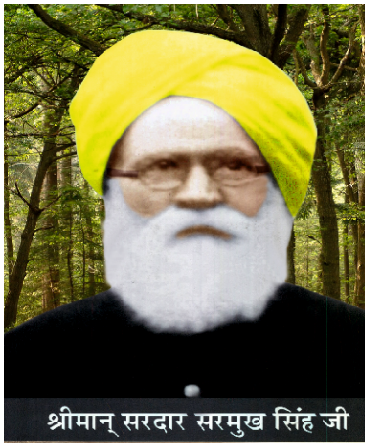
देव समाज के नाना अंगों के परिचालन के लिए जैसे योग्य और विश्वसनीय आत्माओं की सख़्त ज़रूरत है, वह तभी पूरी हो सकती है कि जब बहुत से हृदय ऐसे अधिकार के लाभ करने के लिए व्याकुल हों। मैं बहुत प्रसन्न हूंगा यदि तुम दोनों में से कम से कम एक व्यक्ति देव समाज के किसी विभाग की सेवा के लिए अपने आपको योग्य बना कर भेंट कर सकेगा। .....मैं आप और आपके पारिवारिक जनों के हित के लिए मंगल कामनाओं का बल प्रयोग करता रहता हूं।

आपका सब प्रकार से विकास आकांक्षी,

सत्यानन्द"

इनके सुपुत्र सरमुख सिंह जी कर्मचारी देव समाज के दिलों को हिलाने वाले कुछ शब्द:

"..... फिर श्रीमान् सरमुख सिंह जी बी.ए. ने खड़े होकर कहा कि भगवन्! आपने हमारे परिवार पर जैसे महा अमूल्य उपकार किए हैं, उन्हें सम्मुख लाकर मैं उस समय आश्चर्य से भर रहा था कि जब आप मेरे पिताजी की एक छोटी सी सेवा अर्थात् आपकी ज़मानत देने का ज़िक्र फ़रमा रहे थे। आपके उपकार हम पर इतने अधिक हैं कि यदि हम सब के सब आपके महान् कार्य के लिए भेंट हो जाएं, तो भी उनका कोई ठीक ऋण परिशोध नहीं कर सकते। मुझे अपने पिता की इस पवित्र कुर्बानी से जहां सच्ची खुशी मिली है, वहां मैं प्रण करता हूं कि मैं सब प्रकार से उनकी सेवा के लिए प्रस्तुत रहूंगा और समाज पर उनकी सेवा से संबंधित कोई बोझ न पड़ने दूंगा।"


श्रीमान् सरदार सरमुख सिंह जी

उसके बाद उनकी बहन श्रीमती किशन कौर जी ने खड़े होकर भरे दिल से अपने पिता को मुबारिकबाद दी और ऐसी कामना की कि काश! मेरे लिए भी अनुकूल सामान पैदा हों और मैं भी इसी प्रकार अपने जीवनदाता के महान् कार्य के लिए अपने आपको एक दिन पूर्ण रूप से अर्पण कर सकूं। उस समय जैसे पावन और अनुपम दृश्य उत्पन्न हो रहे थे, उनका बयान नहीं हो सकता।

मोगा में देव समाज की संस्थाओं के लिए श्रीमान् सरदार साहिब का अपूर्व योगदान

बहुत से पाठकों को यह जानकर खुशी होगी कि सरदार साहिब ही के कारण मोगा में सबसे पहले लड़के और लड़कियों का सहशिक्षा स्कूल 1899 में खोला गया। श्रीमान् जी ने ही उसके लिए ज़मीन दान दी जो शायद देव समाज का सबसे विशाल कैम्पस बन गया।

श्रीमान् जी ने भगवान से आग्रह करके मोगा में स्कूल के लिए न केवल ज़मीन दी, अपितु उस स्कूल को चलाने का भार स्वयं और अपने सुपुत्र श्रीमान सरमुख सिंह जी के कंधों पर लिया जिससे अनगिनत विद्यार्थियों ने उच्च चरित्र प्राप्त शिक्षा ग्रहण करने का अवसर पाया। 1947 में भारत वर्ष के विभाजन के पश्चात् देव समाज धर्म विकासलय, नारी आश्रम और विभाजन से पहले कुछ समय के लिए लड़कियों का कालेज भी वहां चलता रहा। उनकी ऐसी अनथक सेवाओं के लिए हमें कितना श्रद्धावान और कृतज्ञ होना चाहिए, इसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता।

तीसरी पीढ़ी में श्रीमान् सरमुख सिंह जी की सुपुत्री कुमारी सतवंती जी भी देव समाज की आजीवन कर्मचारिणी रहीं और सौभाग्य से मैंने भी उनके दर्शन किए हैं। ऐसे सुंदर, श्रद्धावान, कृतज्ञ, सेवाकारी और भगवान और उनके मिशन के लिए पूरी तरह से वफ़ादार श्रद्धेय श्रीमान जी और उनके ऐसे सुंदर हृदय रखने वाले परिवार के चरणों में हमारा प्रणाम।

श्रीमान् जमीयत सिंह जी कर्मचारी देव समाज का परिवार तीन पुश्तों तक देव समाज के कर्मचारी रहे हैं। जैसे कि इनके इकलौते पुत्र श्रीमान् सरमुख सिंह जी (पहला नाम डोगर सिंह) कर्मचारी देव समाज इनकी पोती कुमार सतवंती जी, कर्मचारिणी देव समाज आजीवन गुरु मिशन की सेवा में जीवन व्यतीत करते रहे। इनके पड़पोते श्री गुरिन्द्र सिंह ढिल्लों राधा स्वामी सत्संग ब्यास के वर्तमान प्रमुख हैं।

– डॉ० विनोद खेड़ा

ज्ञानी होना हो जो सम्भव(भगवान देवात्मा द्वारा रचित गीत)

ज्ञानी होना हो जो सम्भव, अपने को पहचानेंगे;
अपने प्रति अज्ञानी रह कर, ज्ञानी नहीं कहलाएंगे।1

क्या है यह अस्तित्व अपना, जो बदलता रात दिन;
किस गति की दिग है जाता, तत्व उस का जानेंगे।2

हो यह जीवन नष्ट कब, कैसे बचे पाए विकास;
सत्य जो-जो इस विषय में, इन की शिक्षा पाएंगे।3

देह क्या और आत्मा क्या, उन में है संबंध क्या;
मुख्य लक्ष्य और गौण क्या, यह तत्व सम्मुख लाएंगे।4

जिस से हो जीवन की रक्षा, उच्च हो उस की गति,
मुख्य होवे लक्ष्य पूरा, ऐसी इच्छा धारेंगे।5

जिन की ज्योति शक्ति पाकर, मोक्ष हो, पावें विकास,
उनकी भक्ति करके सच्ची, उच्च बनना चाहेंगे।6

उच्च भावों की विशेषता और बरकतें

साधारण मनुष्यों को छोड़कर बड़े-2 विद्वान भी कई सत्यों से अन्धे हैं। वह यह नहीं जानते, कि जीवन के उच्च सत्य वा तत्व दिमाग़ के द्वारा नज़र नहीं आते। जिन उच्च भावों के साथ जिन उच्च सच्चाइयों का संबंध हो, उन सच्चाईयों का सत्य ज्ञान उन्हीं उच्च भावों के द्वारा होगा। एक बहुत बड़े विद्वान और योग्य मनुष्य हमेशा ही यह कहते हुए सुने जाते थे, कि कोई मनुष्य ऐसा नहीं, कि जो धन को मुख्य लक्ष्य बनाकर जीवन की यात्रा न करता हो। जब उनको बताया जाता था, कि देखो एक जन ने अपना सब कुछ दूसरों की सेवा के लिए त्याग किया है, और वह वर्षों से त्याग की ज़िन्दगी व्यतीत कर रहे हैं तब, वह यही कहते थे, कि ऐसे जन का धन कमाना ही अवश्य लक्ष्य होगा। एक जन के सामने डाक्टर ऐनीवेसेंट का वर्णन किया गया, कि वह प्रति वर्ष नियत दिन पर अपना सब कुछ दूसरों की सेवा के लिए त्याग देती थीं, तो भी यह भद्र जन यहीं कहते थे, कि उन का भी अवश्य धन लाभ करना ही मुख्य लक्ष्य होगा। यह भद्र जन खुद धन के लालची थे और पूर्ण स्वार्थी थे इसलिए उनके सामने परोपकार की कोई तस्वीर नहीं बनती थी। परोपकार की तस्वीर परोपकारी जन के सम्मुख ही स्पष्ट रूप से प्रगट होती है। जिस उच्च भाव के द्वारा कोई चिन्ता वा क्रिया प्रकाश पाती है, उसी भाव की रोशनी में ही उस भाव सम्बन्धी चिन्ताओं और क्रियाओं का साक्षात् ज्ञान हो सकता है। दयावान् जन को ही दया सम्बन्धी चिन्ताओं और क्रियाओं का साक्षात् ज्ञान हो सकता है। इसके भिन्न लाखों और करोड़ों नीच जीवन धारियों को यह प्रतीत नहीं होता, कि जो उलझनें नीच जीवन के कारण उत्पन्न होती हैं, वह नीच जीवन के द्वारा हल न होंगी। साधारण जन जब अपने नीच जीवन के कारण दुखी होते हैं, तब वह नीच जीवन के दुखों से निकलने के लिए अजीब हल सोचते और काम में लाते हैं। हज़ारों और लाखों जन इसलिए शराब और अन्य नशों का सेवन करते हैं, कि वह इन नशों के द्वारा अपना ग़म ग़लत कर लेंगे। वह मूर्ख समझते हैं, कि ग़म की ओर से थोड़ी देर के लिए ध्यान फिरने से ग़म चला जाएगा। परन्तु ज्यों ही नशा उतर जाता है, त्यों ही उनका दुख फिर नए सिरे से अपना सिर उठाता है। वह बेसुधि में दुख से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। दुख के कारण को नहीं ढूंढते या यूं कहो कि ढूंढ ही नहीं सकते, और उसे मिटाना नहीं चाहते। बल्कि दुख से भागना चाहते हैं। कहलाने वाले हज़ारों और लाखों साधुओं और संतों ने दुख से छुटकारा इस

पृष्ठ 2 पर

बच्चों का कॉर्नर

भगवान देवात्मा के जीवन से – 2

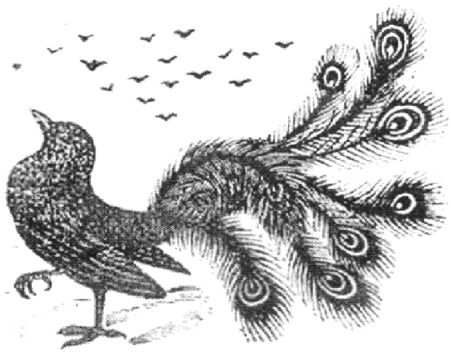
एक कछुवे का दुख दूर करना

भगवान देवात्मा जंगल में सैर कर रहे थे। सड़क की एक ओर कछुवे का एक छोटा सा बच्चा सूखी धरती पर निढाल सा रेंग रहा था। ऐसी असहाय अवस्था में हो सकता था, कि कोई हिंसक पशु उसे अपना भोजन बना लेता। उसकी ऐसी असहाय अवस्था में धर्मावतार की दृष्टि उस पर पड़ी। वह चलते चलते खड़े हो गए। उस असहाय को उठाकर और गाड़ी में रख कर अपने साथ देवाश्रम में ले आए और आप खड़े होकर उन्होंने उसके लिए जल और आहार आदि का प्रबंध कर दिया। दिन में कई वार उसकी अवस्था का पता लेते रहे। रात को उसे अपने कमरे में रखा, कि कहीं बिल्ली उसे कोई हानि न पहुंचावे। अगले दिन प्रात:काल उसे अपने साथ बाहर ले गए। और एक जलाशय ढूंढकर उस में उसे छोड़ दिया। वह खुशी खुशी उस जल में लोप हो गया। मानों वह कह रहा था, "हे मेरे रक्षा कर्ता, दीन दयालु! तुम धन्य हो; मैं तुम्हारी कृपा से एक प्राणदायक स्थान में पहुंच गया हूं, अब तुम निश्चिंत रहो, मैं जाता हूं और जल में कलोल करता हूं।

एक कौए और मोर के परों की कहानी

[भगवान देवात्मा द्वारा रचित पाठ बोध (अमृत की बूंदें) में से]

किसी जंगल में मोरों के कुछ पर पड़े हुए थे। एक कौआ उधर से निकला और उन सुन्दर परों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि यदि मैं इन परों को अपने ऊपर लगा लूं, तो मैं भी एक रंगीला मोर बन जाऊंगा। यह सोचकर उसने ये पर अपने



ऊपर लगा लिए, और अपने इस नए रंग रूप को देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। इस भड़क के साथ जब वह अपने साथी कौओं के पास पहुंचा, तो उन्हें देखकर बहुत हंसा, और कहने लगा, "तुम्हारी बुरी और भद्दी सूरत को देखकर मुझे बहुत घृणा होती है। मेरा जी

नहीं चाहता कि मैं तुम जैसे कलूटे पक्षियों को अपनी जाति का पक्षी कहूं। मैं तुम्हें अपना संबंधी कहना नहीं चाहता। मैं तुम्हारे साथ रहने में अपना अपमान समझता हूं।"

इस भाव को प्रकाश करके कौआ वहां से चला गया। कुछ दूर जाकर देखता है कि मोरों का एक झुण्ड चुग रहा है। कौए ने चाहा कि मैं भी इस दल में जाकर मिलूं। कुछ दूर और चला और सोचा कि ये मोर भी मुझे अपने जैसा पक्षी जानकर मुझे अपने दल में मिला लेंगे, और बहुत सम्मान करेंगे। परन्तु उसकी यह आशा पूरी न हुई।

मोरों की दृष्टि जब कौए पर पड़ी, तो वह विस्मित होकर उसकी ओर देखने लगे। देखते-देखते कुछ चतुर मोर ताड़ गए, और समझे कि यह मोर नहीं है, कुछ और है; हमारे गिरे पड़े पर लगाकर हमारे पास बनावटी रूप धारण करके आया है। अब क्या था, कई मोरों ने आगे बढ़कर उसके सारे बनावटी पर नोचकर फेंक दिए, और वह फिर अपने पहले रंगरूप में प्रगट हो गया।

मोर उसकी इस चाल को देखकर बहुत झुंझलाए। उन्होंने अपनी चोंचें मारकर उसकी अच्छी गत बनाई।

मोर उसकी इस चाल को देखकर बहुत झुंझलाए। उन्होंने अपनी चोंचें मारकर उसकी अच्छी गत बनाई।

बेचारा क्या करे? मार खाकर और लज्जित होकर वहां से भागा; और जहां पर उसके भाई-बन्धु रहते थे, उन्हीं के पास फिर जा पहुंचा। उसके साथियों ने उसकी इस हीन अवस्था को देखकर तिरस्कार पूर्वक उससे कहा, "अरे मूर्ख! तू मोरों के थोड़े से पर लगाकर इतना फूल गया, कि अपनी असल जाति को ही भूल गया; और हमको अपना भाई-बन्धु कहने में अपमान बोध करने लगा। अब देख! तेरा अभिमान कहां गया!! जिनकी जाति में तू मिलने गया था, उन्होंने तेरी कैसी गत बनाई! क्यों, अब फिर कभी मोर बनेगा?" कौआ अपने भाइयों से इस प्रकार तिरस्कृत होकर बहुत लज्जित हुआ और फिर उसने बनावटी मोर बनने और कहलाने की कभी इच्छा न की।

उपदेशः विदेशियों के जैसे वस्त्र पहनकर जो लोग अपने देशवासियों को घृणा करना सीखते हैं, वे क्या विदेशीय और क्या स्वदेशीय जनों के निकट घृणित समझे जाते हैं।

मज़ेदार बूझो तो जानें

प्र०1 रोज़ सुबह को जाना, रोज़ रात को आना,रोज़ तुम्हें सुलाना, तो बताओ मेरा नाम?
प्र०2 नाक मेरी लंबी, नाक से करता सारे काम, तो बताओ क्या है मेरा नाम?
प्र०3 बिना पैर के करते सैर, मेरे बिना तुम मर जाओगे, दो अक्षर का मेरा नाम क्या तुम मेरा नाम बतला पाओगे?
प्र०4 अलग-अलग रंगों में आती, रोती हूं बारिश में, सोती हूं सर्दियों में, गर्मी में देती छाया, क्या कोई मेरा नाम बता पाया?
प्र०5 बिन खाए, बिन पिए, सबके घर में रहता हूं। ना खाता हूं, ना पीता हूं, ना रोता हूं, घर की रखवाली करता हूं।

उत्तर 1. रात 2. हाथी 3. हवा 4. छाता 5. ताला।

ज़रा हँस लो खिल खिलाकर

English के अलावा हिंदी में भी कुछ शब्द Silent होते हैं।

1. जब कोई दुकानदार ग्राहक के साथ भाव करते समय कहता है कि "आपको इस वस्तु की कीमत ज़्यादा "_____" नहीं लगाएंगे"

तो इसमें... **चूना** शब्द Silent होता है।

2. शादी के बाद लड़की की विदाई के समय ये कहा जाता है कि हमारी लड़की तो "_____" गाय है गाय"

इसमें "**सींगवाली**" शब्द Silent होता है।

3. दुल्हन की विदाई के वक्त जब दूल्हे से कहा जाता है..."_____" ख्याल रखना

इसमें "**अपना**" शब्द Silent होता है।

4. जब कोई नेता कहता है... "_____" गरीबी हटाऊंगा तब

इसमें "**अपनी**" शब्द Silent होता है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें:- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

भगवान देवात्मा मैमोरियल फ़ाउन्डेशन द्वारा अब तक प्रकाशित पुस्तकों की सूची

(Arranged Alphabetically)

क्रं.सं.	भगवान देवात्मा द्वारा रचित पुस्तकें	पुनः प्रकाशन की तिथि	
1.	आत्म परिचय (प्रथम भाग)	दिसम्बर	2016
2.	आप... हमारी पहचान से परे	दिसम्बर	2007
3.	अपने छोटे भाई के संबंध में मेरी सेवाएं	दिसम्बर	2020
4.	अमृत की बूंदें (कहानी संग्रह) (पाठ बोध की शिक्षाप्रद कथाएं)	दिसम्बर	2005
5.	आत्म-कथा अर्थात् देवसमाज स्थापना की जुबिली ऐड्रेस	अगस्त	2021
6.	भगवान देवात्मा के अद्वितीय जीवन व्रत की सिद्धि में सेवाकारी बनने के निमित्त देव समाज के चार महालक्ष्य	अगस्त	2021
7.	भगवान देवात्मा की आखरी वसीयत	दिसम्बर	2020
8.	भगवान देवात्मा के व्याख्यान (पहला भाग)	दिसम्बर	2009
9.	भगवान देवात्मा के व्याख्यान (दूसरा भाग)	दिसम्बर	2009
10.	देवात्मा के अद्वितीय देव रूप के सम्बन्ध में अति गूढ़ और महा मूल्यवान बारह मूल वाक्य	दिसम्बर	2020
11.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (पहला खण्ड)	दिसम्बर	2015
12.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (दूसरा खण्ड)	दिसम्बर	2016
13.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (तीसरा खण्ड)	दिसम्बर	2016
14.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (चौथा खण्ड)	दिसम्बर	2016
15.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (पांचवां खण्ड)	दिसम्बर	2016
16.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (छठा खण्ड)	दिसम्बर	2016
17.	देवात्मा का अद्वितीय त्याग (सातवां खण्ड)	दिसम्बर	2016
18.	देवात्मा कौन हैं?	दिसम्बर	2015
19.	देव शास्त्र (पहला भाग)	दिसम्बर	2019
20.	देव शास्त्र (दूसरा भाग)	दिसम्बर	2020
21.	देव शास्त्र (तीसरा खण्ड)	दिसम्बर	2019
22.	देव शास्त्र (चौथा खण्ड)	दिसम्बर	2017
23.	देवात्मा का अद्वितीय देवरूप	दिसम्बर	2020
24.	धर्म संगीत	दिसम्बर	2007
25.	ईश्वर (ख़ुदा) का झूठा विश्वास और उसके बहुत बुरे और भयानक फल	दिसम्बर	2004
26.	जीवन पथ से अन्धता व गुरु की महिमा (बहुत से भक्तों की वाणी) एवं कबीर जी के दोहे	दिसम्बर	2004
27.	लीलावती चरित (एक आदर्श हिन्दू नारी की जीवन कथा)	दिसम्बर	2016
28.	मेरी विशेषता	दिसम्बर	2019
29.	मेरा वंश और मेरे वंशीय पूर्वज	दिसम्बर	2018
30.	मनुष्य जगत् के लिए एकमात्र विज्ञान मूलक सच्चे धर्म के मूल सिद्धान्त	दिसम्बर	2010
31.	मुझ में देव जीवन का विकास (पहला खण्ड)	दिसम्बर	2019
32.	मुझ में देव जीवन का विकास (दूसरा खण्ड)	दिसम्बर	2019

33.	मनुष्यात्मा के संबंध में चार महा तत्व	दिसम्बर	2018
34.	नीतिसार	दिसम्बर	2017
35.	नीच शक्तियों के दासत्व से मोक्ष की आवश्यकता	दिसम्बर	2020
36.	पशु-जगत और उसके संबंध में मनुष्य के कर्तव्य	दिसम्बर	2018
37.	पुष्प और पुष्प अनुराग	दिसम्बर	2018
38.	श्रीमती सावित्री अग्निहोत्री का जीवन चरित	दिसम्बर	2019
39.	सिद्धान्त दर्पण	दिसम्बर	2016
40.	उच्च व श्रेष्ठ चरित्र के सोलह बढ़े बढ़े सद्गुण	दिसम्बर	2020
41.	शिष्टाचार (A Book On Manners)	दिसम्बर	2016
42.	श्री देवगुरु भगवान का आविर्भाव	दिसम्बर	2004
43.	सत्य और मिथ्या धर्म मतों के विश्वासियों की पहचान	दिसम्बर	2004
44.	सत्य देव भगवान देवात्मा के संबंध में अनुरागी शिष्य बनने की आवश्यकता और विधि	दिसम्बर	2020
45.	विनाश और विकास-दो अटल नियम	मई	2011
46.	विजय पताका	दिसम्बर	2020
47.	भगवान देवात्मा का अतुल्य दान	दिसम्बर	2010
48.	Destruction and Evolution - Two Immutable Laws [Translation of विनाश और विकास-दो अटल नियम]	December	2019

क्रं.सं.	देव समाज की पुस्तकें	पुनः प्रकाशन की तिथि	
1.	अनोखा बलिदान (डा. हरनाम सिंह जी)	दिसम्बर	2004
2.	आत्मा संबंधी घोर अंधकार	दिसम्बर	2013
3.	अहं-इन्सान का सबसे भंयकर शत्रु	नवम्बर	2012
4.	आध्यात्मिक जगत का चांद (श्रद्धेय श्रीमान् ईश्वर सिंह जी का जीवन चरित्र)	दिसम्बर	2020
5.	भाई देव बल जी	दिसम्बर	2015
6.	भगवान देवात्मा की वाणी के नोट	दिसम्बर	2015
7.	भगवान देवात्मा का घोर कानूनी उत्पीड़न	दिसम्बर	2009
8.	भगवान देवात्मा के विशेष विशेष लेख और उपदेश (पहला भाग)	दिसम्बर	2018
9.	भगवान देवात्मा के विशेष विशेष लेख और उपदेश (दूसरा भाग)	दिसम्बर	2018
10.	भगवान देवात्मा के विशेष विशेष लेख और उपदेश (तीसरा भाग)	दिसम्बर	2020
11.	देवत्व के रंग की एक झलक (श्रीमान लाला मुरलीधर जी का संक्षिप्त जीवन वृतान्त)	दिसम्बर	2005
12.	देव समाज के व्रती कर्मचारी श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन चरित्र (तृतीय खण्ड)	दिसम्बर	2018
13.	देव धर्म प्रचारक गाईड	दिसम्बर	2018
14.	देवत्व के पांच सितारे (श्रीमती डॉ. प्रेमदेवी जी, श्रीमान ब्रह्मचारी परमेश्वर दत्त जी विशारद, श्रीमान देवत्व सिंह जी, सरदार साहब श्रीमान जमीयत सिंह जी अथवा श्रीमान बुद्ध सिंह जी)	दिसम्बर	2015
15.	देहली के सौभाग्यवान डाक्टर (डा. सिरी राम जी)	नवम्बर	2014
16.	एक साधक के हितकर साधन - धर्मबल	दिसम्बर	2019
17.	एक अनोखी बेटी	जनवरी	2013
18.	हृदय परिवर्तन-कलियुग में सत्युग (पहला भाग)	दिसम्बर	2004
19.	हृदय परिवर्तन (दूसरा भाग)	दिसम्बर	2013
20.	जब अपनी आन्तरिक झलक नज़र पड़ी (रूहानी रोशनी के प्रकाश में)	दिसम्बर	2013

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

21.	जिन पर हमें नाज़ है (श्रीमान स्वामी गोबिन्द राम जी का जीवन चरित्र)	दिसम्बर	2005
22.	कैसे हुए ये चमत्कार?	फरवरी	2013
23.	मानवता का निर्माण अर्थात् धर्म विकासालय द्वारा मनुष्य जीवनों में उच्च परिवर्तन	नवम्बर	2014
24.	मुझे क्या से क्या बना दिया (श्रीमान साधु जानकी दास जी का आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन)	दिसम्बर	2009
25.	मृत्यु से जीवन की ओर (श्रीमान नौध सिंह जी)	दिसम्बर	2015
26.	पूजनीया श्रीमती देवकी देवी जी अग्निहोत्री का जीवन चरित।	दिसम्बर	2019
27.	परम् पूजनीय भगवान देवात्मा की जीवन कथाएँ (पाँचवा भाग)	दिसम्बर	2007
28.	श्रीमान् पं परमेश्वर दत्त जी का जीवन वृतांत।	दिसम्बर	2019
29.	परलोक (सच्चाई की रोशनी में)	दिसम्बर	2011
30.	रूहानी गुलदस्ता (प्रथम खण्ड)	दिसम्बर	2016
31.	रूहानी गुलदस्ता (दूसरा खण्ड)	दिसम्बर	2016
32.	रूहानी इन्कलाब (अर्थात आध्यात्मिक क्रान्ति - सरदार हरनाम सिंह जी का जीवन चरित्र)	दिसम्बर	2017
33.	श्रीमान निर्मल सिंह जी की डायरी (1915 - 1928)	दिसम्बर	2019
34.	श्रीमती धर्म प्यारी जी	दिसम्बर	2015
35.	श्री देव गुरु भगवान के चरणों में रहने के दिनों की याद - श्रीमान् ईश्वर सिंह जी	नवम्बर	1990
36.	संगीत सुधा	दिसम्बर	2015
37.	संकलित संगीत सुधा	दिसम्बर	2008
38.	उपकार माला	दिसम्बर	2019
39.	उचित वा हितकर दान	दिसम्बर	2020
40.	विकास पथ के राही - श्रद्धेय श्रीमान् निर्मल सिंह जी का जीवन चरित्र	दिसम्बर	2015
41.	A Short Catechism On The Unique Life and Teachings of Bhagwan Dev Atma	December	2017

NOTE:- 13 MORE BOOKS ARE IN THE PROCESS OF PRINTING.

श्रीमान् बलदेव सिंह जी, एम.ए., (लाईफ वर्कर) मंत्री - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिसर और मालिक "धर्म जीवन" ने Surya Laser Den, Chandigarh से छपवाकर म.नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Post